

Dr. Keerthi Kumar
Asst Prof (Psych)

Recd of Psychology

S.R.A.P. College, Barachukia, East Champaran

(A constituent unit of B.R.A. Bihar University Muzaffarpur)

Subject - Psychology

Topic - Topographical aspect of mind.

Class - B.A. Pass (Hon) II Second Paper

Day - Tuesday Day

Date - 07/02/23

Period - 2nd

Contact no - 98014 66117

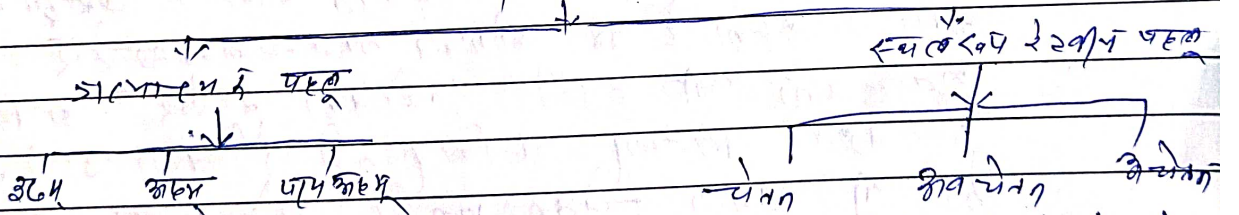
यह मन के अग्रणी पक्षों का वर्णन है।

चेतन, अचेतन एवं अचेतन के अंशों।

Describe the Topographical aspects of mind?

मानसिक संरचना के दो प्रमुख पक्ष हैं - चेतन, अचेतन। चेतन वह भाग है जो हमारे सामने आता है, अचेतन वह भाग है जो हमारे पीछे छिपा हुआ है।

मन की संरचना



अचेतन मन को हम कहते हैं। इसके दो भाग हैं - चेतन और अचेतन। चेतन वह भाग है जो हमारे सामने आता है, अचेतन वह भाग है जो हमारे पीछे छिपा हुआ है।

1. चेतन - चेतना का स्वरूप हमें मालूम है। यह हमें अपने अंतर्गत भाव, भावना, विचारों, धर्म-निर्यातों के प्रति हमारे अचेतन मन को हमें मालूम है। जो एक भाग है जो हमारे अचेतन मन में छिपा हुआ है।

2. अचेतन - अचेतन मन को हमें मालूम नहीं है। यह हमारे अचेतन मन में छिपा हुआ है। यह हमारे अचेतन मन में छिपा हुआ है। यह हमारे अचेतन मन में छिपा हुआ है।



Officer

2. कवचतन - 19 वी शताब्दी का मानसिक विज्ञान का प्रारंभिक चरण है। इसका उद्देश्य मानसिक प्रक्रियाओं को समझना और नियंत्रित करना था। इसका प्रभाव आधुनिक मनोविज्ञान पर गहरा है।

(क) द्वि-मन सिद्धांत :- इस सिद्धांत का प्रतिपादन डी. एच. एडिसन ने किया था। इसमें अनुसंधान प्रयोग करने के दो मन होते हैं।

- 1- वस्तुमय - objective mind
2. निष्पक्ष मन - subjective mind.

इन दोनों की प्रकृति, गुण, प्रतिष्ठादि विचार-विमर्श होते हैं। इनका उद्देश्य ही प्रमाण कवचतन प्रयोग व वस्तुमय का ज्ञान आंतरिक मन के द्वारा होता है जबकि निष्पक्ष मन की जानकारी आंतरिक मन के द्वारा होता है। वस्तुमय मन के आधार पर ही जगत् की प्रकृति निष्पक्ष मन में पड़ने विशेष प्रकार की होती है। कवचतन के उद्देश्य की द्वि-मन सिद्धांत का उद्देश्य (क) ही कवचतन मन का विकास न हो कि पर जाहाना ही कवचतन द्वि-मन उसके कवचतन पर ही है।

(ख) पराधीनता दृष्टिकोण :- इस दृष्टिकोण के अनुसार कवचतन वस्तुमय चेतन मन से प्रभावित है।

सुधारक चेतन की दो कार्यों में वृद्धि का प्रयास है। दृष्टिकोण का उद्देश्य ही मानसिक प्रक्रिया को नियंत्रित करना है जो ही मानसिक चेतन का उद्देश्य है। कवचतन ही इस "चेतन के कवच" का विकास है जिससे विचार, धर्म, नैतिकता तथा उच्चतर चेतन की ही सफल चेतन मन के प्रयोग का उद्देश्य है। कवचतन के समारम्भ के उपरान्त दृष्टिकोण

विकास के उच्च स्तर पर नैतिकता नही है। समारम्भ के उच्च नैतिकता दृष्टिकोण प्रदान करने की प्रतीति का प्रयोग है। - कवचतन चेतन के कवचतन का उद्देश्य ही कवचतन मन की वृद्धि का है। जिसमें पराधीनता का विकास निहित रहता है जिसका प्रतिपादन विचार का होता है।